→ Death of chandragupta

340 A.D. 380 A.D - Death of Samudragupta

Q → Explain the conquests of Samudra gupta why he is called Indian Napoleon

or

समुद्रगुप्त के विजय अभियान की व्याख्या करें।

Ans → गुप्त साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त के द्वारा चौथी शताब्दी में की गई थी और इस काल में बहुत सारे महा प्रतापी राजा आये जैसे की चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त II, कुमार गुप्त, स्कन्दगुप्त इत्यादि पर इन सबके साथ ही चन्द्रगुप्त के बाद समुद्रगुप्त ही एक प्रमाणो राजा हुआ इसने अपने शासन काल में बहुत सारे उपाधि प्राप्त की जैसे की कविराज, पराक्रमांक अप्रतिमेय पराक्रम इत्यादि समुद्रगुप्त ने चन्द्रगुप्त के मृत्यु के बाद 340 ई० में उसने राज्याभिषेक किया और उसका पूरा शासन काल ही विजय अभियानों से भरा रहा इसी सैनिक अभियान के कारण समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है। समुद्रगुप्त के बारे में जानकारी हमें प्रयाग प्रशस्ति जो की राजकवी हरिषेण के द्वारा लिखा गया है से प्राप्त होता है यह प्रयाग प्रशस्ति संस्कृत शैली में लिखी गई है पर जिस स्थान पर कोई तिथी अंकित नहीं पर समुद्रगुप्त के जानकारी के लिए प्रयाग प्रशस्ति काफी महत्वपूर्ण है। समुद्र गुप्त के काल के सिक्के से भी हमें उसके बारे में कुछ जानकारियाँ प्राप्त होती है।

उन्हें गुप्त वंश का सही में संस्थापक और विस्तार करता माना जाता है क्योंकि उसने युद्ध में विस्तार करके गुप्त शासन को फैलाया और सोना का भी निर्माण किया। समुद्रगुप्त सच में एक युद्ध विजेता, संस्थापक, साम्राज्य विस्तार कर उसने यह साबित कर

Scanned with CamScanner

दिया की वो सच में एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था Dr. V. A Smith के शब्दों में उसे Indian Napolean और उसे भी ज्यादा कहा जाता है क्योंकि उसने अपने मृत्युकाल तक कोई भी युद्ध न हारा था। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार उन उत्तरी भागों में किया जहां व वो समझता था की उससे साम्राज्य अनुकूल हो जायेगा उसके बाद उसने दक्षिण विजय अभियान की भी शुरुआत की और उसमें उसे सफलता भी मिली। उसने उत्तर भारत के नौ राजाओं को पराजित कर उनके राज्य गुप्त साम्राज्य में मिला लिये दक्षिणापथ के 12 राजाओं को पराजित कर उन्हे वापस लौटा दिया और दक्षिण राजाओं के प्रति ग्रहण अधिकार मोक्ष शत्रु को मुक्त करना अनुग्रह राज्य लौटाकर उपकार करना। जो अप्रत्यक्ष शासन की नीति थी। साम्राज्य के विस्तार और संस्थापना के लिए समुद्रगुप्त का विजय अभियान काफी महत्वपूर्ण था।

Dr. H. C. Raychaudhary के अनुसार

"It was the aim of Samudragupta to bring about the political unification of India and make himself an Eksat or sole ruler like Mahapadma."

लेकिन समुद्रगुप्त उसमें उतनी सफलता न मिली क्योंकी उसकी आकांक्षा थी की पूरे भारत पर अधिकार करे। उसने अपने साम्राज्य विस्तार से एकता स्थापित कर दिया और समुद्रगुप्त सच में एक ऐसा विजेता था जिसकी की गुप्त काल में एक महान साम्राज्य संस्थापक और सम्राज्य विजेता कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

भारतीय इतिहास का विशद अध्ययन करने से इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि भारतीय इतिहास गुप्त काल अपना अलग एवं विशेष स्थान रखता है विभिन्न विद्वानों द्वारा मौर्य युग के पश्चात् गुप्त युग को ही प्राचीन भारत का सर्वाधिक समृद्धशाली युग माना गया है कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद भारत में जो राजनीतिक अव्यवस्था और अस्थिरता फैली थी उसे गुप्त सम्राटों ने ही समाप्त किया और एक बार फिर भारत को राजनीतिक स्थिरता प्रदान की कुषाणों के पतन के बाद भारत में नागवंश और वाकाटक वंश जैसे राजतन्त्र तथा मालव आर्जुनायन लिच्छवि यौधेय जैसे गणतन्त्र तथा मालव गणतन्त्र राज्य प्रसिद्ध हुए चौथी शताब्दी ई० में इन स्वतन्त्र राज्यों को समाप्त कर दिया गया है इन राज्यों के खण्डहरों पर उत्तर भारत में गुप्त साम्राज्य की स्थापना की गयी प्रसिद्ध विद्वान् विन्सेन्ट स्मिथ के अनुसार चौथी शताब्दी में प्रकाश का पुनः उदय होता है अंधकार का पर्दा उठ जाता है और भारत के इतिहास को फिर से एकता प्राप्त होती है गुप्त साम्राज्य का महत्व इससे भी स्पष्ट हो जाता है। कि अधिकांश विद्वानों ने गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल माना है जो सत्य जान पड़ता है इस काल में भारतीय संस्कृति का व्यापक प्रचार प्रसार हुआ इस काल में न केवल साहित्य की ही उन्नति हुई बल्कि इस काल में कला का भी पूर्णरूपेण विकास हुआ अतः कहा जा सकता है कि भारतीय इतिहास में गुप्तों का काफी महत्व रहा है।

अगर हम समुद्रगुप्त के अभियानों का वर्णन करेंगे तो उसके लिए हमें उसे तीन भागों में विभाजित करना होगा।

Scanned with CamScanner

(i) प्रथम आर्यवर्त अभियान
(ii) समुद्रगुप्त का द्वितीय आर्यावर्त अभियान
(iii) दक्षिण अभियान
(iv) सीमांत राज्यों की विजय
(v) विदेशी राज्यों की विजय

इन सारे की व्याख्या हम एक एक करके निचे कर रहे हैं।

प्रथम आर्यावर्त अभियान —
सिंहासन पर आसीन होते ही समुद्रगुप्त ने अपना विजय अभियान प्रारंभ कर दिया समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अपने शासनकाल में उत्तरी भारत जिसे आर्यावर्त के नाम से भी जाना जाता है पर दो बार आक्रमण किया अपने आर्यावर्त के प्रथम अभियान में उसने वहाँ के तीन राजाओं अच्युत नागसेन तथा कोटकुलज को पराजित किया इन तीनों शासकों का उत्तरी भारत में किन प्रदेशों पर शासन था इस विषय में एकमत नहीं है डॉ के पी जायसवाल के अनुसार अच्युत अहिच्छत्र का शासक था अहिच्छत्र (बरेली) से एक मुद्रा प्राप्त हुई है जिस पर अच्यु लिखा है यह मुद्रा नागवंशीय राजाओं की मुद्रा से मिलती जुलती है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि अच्युत नागवंशीय और अहिच्छत्र बरेली का राजा था जिसे समुद्रगुप्त ने अपने प्रथम आर्यावर्त के सैन्य अभियान में पराजित किया आर्यावर्त का दूसरा राजा नागवंश का नागसेन था जिसकी राजधानी पद्मावती थी डॉ के पी जायसवाल के अनुसार नागसेन मथुरा का नागवंशीय राजा था वह शासक काफी प्रभावी रहा है परन्तु उसे समुद्रगुप्त ने पराजित किया आर्यावर्त का तीसरा राजा कोटकुलज वंश का था।

आर्यावर्त के नागवंश राजा के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता परन्तु मिश्रक मथुरा से प्राप्त अनेक मुद्राओं में राजाओं के नाम के अंत में दत्त जुड़ा है जिससे यह कहा जा सकता है कि इस वंश समुद्रगुप्त का युद्ध नागदत्त के साथ ही हुआ था गणपति नागसेन को मथुरा का राजा कहा जाता है चन्द्रवर्मा को डॉ. भण्डारकर ने पूर्वी बंगाल के बाकुड़ा प्रदेश का राजा माना है। बलवर्मन किस वंश और प्रदेश का राजा था इस सम्बन्ध में अभी तक स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है समुद्रगुप्त ने इन राजाओं को पराजित कर इनके राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया इसकी पुष्टि प्रशस्ति के आर्यावर्त राज प्रसभोद्धरण वाक्य से होती है।

समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय

आर्यावर्त के प्रथम सैन्य अभियान के बाद समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत को विजित करने का सैनिक अभियान किया प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त द्वारा दक्षिण भारत के पराजित राज्यों के नाम तो मिलते हैं किंतु राजाओं के नहीं दक्षिण अभियान में समुद्रगुप्त ने 12 राज्यों कौशल महाकान्तार कोराल पिष्टपुर कोट्टूर एरण्डपल्ल कांची अवमुक्त वेंगी पालक्क देवराष्ट्र एवं कुस्थलपुर के राजाओं को पराजित कर अपने अधिकृत कर लिया ऐसा लगता उस समय उत्तर भारत और दक्षिण भारत की दूरी इतनी थी कि समुद्रगुप्त के लिए दक्षिण भारत पर शासन करना अत्यंत कठिन होता था इस लिए वो एक अलग नीति का उपयोग करने लगा वही दक्षिण के जिन राजाओं को उसने विजित किया तो उन्हें वापस कर दिया पराजित सभी राजाओं को समुद्रगुप्त ने अपना अधिकार

जिसका नाम अच्युत है इसका मगध पर शासन था समुद्रगुप्त ने इसे भी पराजित किया समुद्रगुप्त ने अपने प्रथम अपने प्रथम आर्यावर्त के सैन्य अभियान में इन तीन राजाओं को पराजित कर उनके साम्राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

समुद्रगुप्त के द्वितीय आर्यावर्त अभियान

ऐसा अनुमानित होता है कि समुद्रगुप्त ने अपने प्रथम सैन्य अभियान में आर्यावर्त के राजाओं की शक्ति का पूर्णतः दमन न किया होगा जब वह दक्षिण के विजय अभियान में व्यस्त था तब आर्यावर्त के राजाओं ने पुनः अपनी शक्ति को एकत्र कर लिया था प्रयाग प्रशस्ति में आर्यावर्त के द्वितीय सैन्य अभियान कारणों का उल्लेख नहीं है किन्तु उन राजाओं के नाम नामों का अवश्य उल्लेख है अपने द्वितीय अभियान में उसने उत्तरी भारत अथवा आर्यावर्त के नौ राजाओं रुद्रदेव मतिल [illegible] मतिल नागदत्त चन्द्रवर्मन गणपतिनाग नागसेन अच्युत नन्दिन एवं बलवर्मन को पराजित किया।

प्रयाग प्रशस्ति में आर्यावर्त के द्वितीय अभियान में रुद्रदेव नाम के राजा का उल्लेख है जो कि कौशाम्बी का राजा था और समुद्रगुप्त ने उसे पराजित किया था मतिल के राज्य पर विद्वानों में मतभेद है क्योंकि उसका कोई प्रमाण न मिला है बुलन्दशहर के पास एक शील पर मतिल नाम अंकित है जिसे की विद्वानों ने मतिल कहा है। अगर इस एक की कोई बात है तो वह बुलन्द शहर के पास पास था बुलन्दशहर का शासक था।

अधिश्वर स्वीकार कर उन्हें कर देना स्वीकार कर लिया साथ ही इन राजाओं ने समुद्रगुप्त को उपहारस्वरूप अपार धनराशि स्वर्ण हीरे तथा मोती आदि दिये दक्षिण के प्रति अपनायी गयी समुद्रगुप्त की इस नीति को Catching Butterflies and setting them free का नाम दिया जाता है

जो भी हो दक्षिण में समुद्रगुप्त के द्वारा अपनायी गई नीति उसके कुशल राजनीतिज्ञ एवं दूरदर्शी होने का परिचायक है।

सिमान्त राज्यों की विजय

समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त द्वारा युद्ध में जीते गये राज्यों के अतिरिक्त कुछ ऐसे राज्यों की सूची दी गयी है जिन का समुद्रगुप्त से युद्ध नहीं हुआ इससे यह अनुमानित होता है कि समुद्रगुप्त की विजयों से सीमान्त राज्यों के राजा अत्यन्त ही भयभीत हो गये थे अतः जब समुद्रगुप्त ने इन सीमान्त राज्यों पर आक्रमण किया तो कुछ राज्यों ने युद्ध में पराजित होने के बाद तथा कुछ राज्यों ने बिना युद्ध लड़े ही समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली साथ ही सीमान्त राज्यों के राजाओं ने समुद्रगुप्त को वचन दिये कि वे वार्षिक कर देने के अतिरिक्त हर सम्भव उसे समुद्रगुप्त संतुष्ट रखने का प्रयास करेंगे समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करने वाले राज्यों में प्रमुख सीमांत राज्य समतट दावक कामरूप कर्तृपुर एवं नेपाल आदि थे इन सिमांत राज्यों में समतट राज्य पूर्वी बंगाल के बंगाल दीनाजपुर और राजशाही ने जिले इस राज्य में शामिल थे कामरूप राज्य आधुनिक असम था नेपाल राज्य से तात्पर्य आधुनिक नेपाल राज्य से तात्पर्य आधुनिक नेपाल राज्य से है कर्तृपुर सीमान्त राज्य को

सीमान्त राज्य में सम्भवतः गढ़वाल और रुहेलखण्ड के प्रदेश आते थे। प्रयाग प्रशस्ति में सीमान्त राज्यों के प्रति अपनायी गयी समुद्रगुप्त की नीति का उल्लेख किया गया है। प्रयाग प्रशस्ति में पूर्वी और पश्चिमी सीमा राज्यों के शासकों ने समुद्रगुप्त के प्रभाव में आकर उसकी इच्छानुसार कुछ कार्य किये उन्होंने सर्व करदान अर्थात सभी प्रकार के कर देना स्वीकार किया उन्होंने आज्ञाकरण आज्ञाओं का पालन किया उन्होंने विनित अथवा प्रणाम विनीत भाव धारण किया। उन्होंने आगमन अर्थात विशेष अवसरों पर समुद्रगुप्त की सभा में उपस्थित होना स्वीकार किया सीमान्त राज्यों द्वारा किये गये ये कार्य समुद्रगुप्त की सीमान्त राज्यों के प्रति अपनायी गयी नीति के महत्वपूर्ण अंग थे।

विदेश नीति —

प्रयाग प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त की शक्ति और क्षमता से न केवल देशी बल्कि विदेशी राज्य भी प्रभावित हुए इन विदेशी राज्य में देव पुत्र शाही शाहानुशाही शक मुरुण्ड सिंहल एवं सर्वद्वीपवासी प्रमुख थे इन विदेशी राज्यों का उल्लेख प्रयाग प्रशस्ति में हुआ जिसके द्वारा उन्होंने समुद्रगुप्त को संतुष्ट करने का प्रयास किया वास्तव में ये कार्य समुद्रगुप्त की विदेशी राज्यों के प्रति अपनायी गयी नीति का महत्वपूर्ण अंग जान पड़ते हैं जो भी हो विदेशी राजाओं ने इस नीति के अंतर्गत समुद्रगुप्त के प्रति अपनी श्रद्धा भक्ति प्रकट की इन्होंने कन्या उपायन पर समुद्रगुप्त को अपनी कन्याएं दी उसने गरुड़ मुद्रा चिह्न के प्रयोग की सादर आज्ञा मांगी गरुड़ चिह्न तत्कालीन गुप्त शासकों राजा चिह्न था ऐसा अनुमानित होता है यदि विदेशी राजा गरुड़ चिह्न युक्त मुद्राएं राजाज्ञाएं अपने राज्यों में जारी करता था उसकी इस नीति की अधीनता के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया गया।

मुल्यांकन →

समुद्रगुप्त का काल गुप्त काल में सबसे ज्यादा उन्नतो का काल था इस काल में उसने केवल न राज्य का विस्तार किया बल्कि विदेश तक उसे फैलाया और वह उसे अच्छी तरह से चलाना भी जानता था। Dr. V.A Smith के द्वारा समुद्रगुप्त के बारे में व्याख्या करते हुए कहा गया है की

Samudra gupta was a man of exceptional personal capacity and unusual varied gifts. He stands forth as a real man a scholar, a poet a musician and a warrior.

गुप्त काल समुद्रगुप्त के उपलब्धियों से भरा पड़ा है और इसी चलते इस प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्त काल को स्वर्ण युग भी कहते है।

Scanned with CamScanner